OVIDYA BHAWAN, BALIKA VIDYAPITH

Shakti Utthan Ashram, Lakhisarai-811311(Bihar)

(Affiliated to CBSE up to +2 Level)

CLASS: XI **SUB.: MUSIC (VOCAL)** **DATE: 07-10-2020**

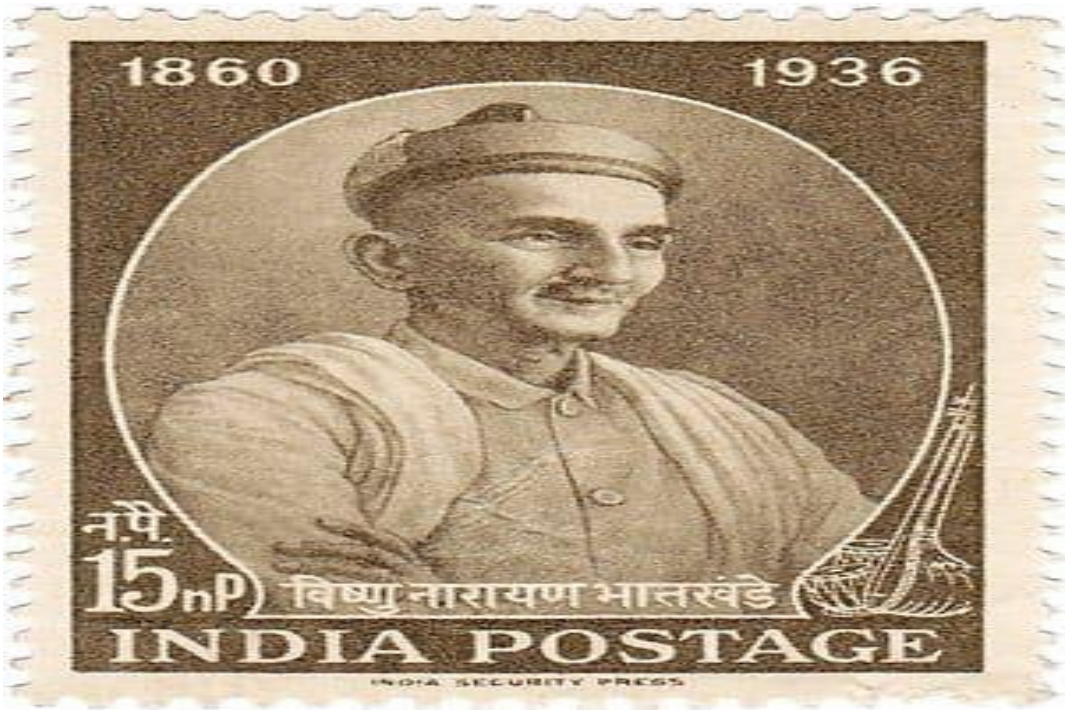

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के इतिहास में पंडित विष्णु नारायण भाटखंडे का एक महत्वपूर्ण स्थान है।एक समय था जब अंधेरे शास्त्रीय संगीत क्षेत्र में अज्ञान, पात्रों या राणाओं के पैटर्न के कारण होता था स्पष्ट नहीं थे इस समय के दौरान, पंडित भातखंड ने यात्रा की, अथक प्राचीन किताबों का अध्ययन किया, वरिष्ठ संगीतकारों से परामर्श किया और दृढ़ता से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पहलुओं की स्पष्ट समझ स्थापित की।

जन्म 10 अगस्त, 1860 (जन्माष्टमी) को मुंबई में हुआ था। उनकी शिक्षा पहले मुंबई और फिर पुणे में हुई। वे व्यवसाय से वकील थे तथा मुंबई में सॉलिसीटर के रूप में उनकी पहचान थी। संगीत में रुचि होने के कारण छात्र जीवन में ही उन्होंने श्री वल्लभदास से सितार की शिक्षा ली। इसके बाद कंठ संगीत की शिक्षा श्री बेलबागकर, मियां अली हुसैन खान तथा विलायत हुसैन से प्राप्त की।

पत्नी तथा बेटी की अकाल मृत्यु से वे जीवन के प्रति अनासक्त हो गये। उसके बाद अपना पूरा जीवन उन्होंने संगीत की साधना में ही समर्पित कर दिया। उन दिनों संगीत की पुस्तकें प्रचलित नहीं थीं। गुरु-शिष्य परम्परा के आधार पर ही लोग संगीत सीखते थे; पर पंडित जी इसे सर्वसुलभ बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि संगीत का कोई पाठ्यक्रम हो तथा इसके शास्त्रीय पक्ष के बारे में भी विद्यार्थी जानें।

10:05 AM

संगीत विद्यालयों की स्थापना

विष्णुनारायण भातखंडे के प्रयत्नों से बाद में अन्य कई स्थानों पर भी संगीत सम्मेलन हुए तथा संगीत विद्यालयों की स्थापना हुई। इसमें लखनऊ का 'मैरिस म्यूजिक कॉलेज', जो अब 'भातखंडे संगीत विद्यापीठ' के नाम से जाना जाता है, ग्वालियर का 'माधव संगीत महाविद्यावय' तथा बड़ौदा का 'म्यूजिक कॉलेज' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं